ग्वालियर दुर्ग स्थित तेली का मन्दिर एवं उसकी प्रमुख प्रतिमाएं

* डॉ॰ सुजाता गौतम

ग्वालियर मध्यप्रदेश राज्य के अन्तर्गत आता है। यह मध्यप्रदेश के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है। वर्तमान में ग्वालियर जिले की सीमाएं चार जिलों–मुरैना, भिण्ड, शिवपुरी एवं दतिया को स्पर्श करती हैं। प्राचीनकाल से ही राजनैतिक गतिविधियों के कारण समय–समय पर इसकी सीमाओं में परिवर्तन होता रहा है। इस क्षेत्र पर विभिन्न राजवंशों ने शासन किया। जिसमें नाग, गुप्त, हूण, प्रतिहार, कच्छपघात, तोमर और मुस्लिम आदि राजवंश प्रमुख हैं। ग्वालियर का नामकरण एक सिद्ध तपस्वी ग्वालिपा (ऋषि गालव) के नाम के आधार पर स्वीकार किया जाता है। ग्वालियर दुर्ग से 525 ई॰ का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो कि दुर्ग से सूचित अभिलेखों में प्राचीनतम है। ग्वालियर दुर्ग धरातल से 300 फीट ऊंचा है। इसकी अधिकतम लम्बाई उत्तर से दक्षिण की ओर है। दुर्ग पर पहुंचने के लिए तीन प्रमुख रास्ते हैं, जिनमें से एक रास्ता पूर्व दिशा में और दो रास्ते पश्चिम दिशा में हैं।

कालक्रम की दृष्टि से ग्वालियर दुर्ग पर छठीं शताब्दी ई॰ से 11वीं शताब्दी ई॰ तक के मन्दिरों की सूचनाएं प्राप्त होती हैं। यह मन्दिर हूण, प्रतिहार एवं कच्छपघात राजवंशों के शासकों के शासनकाल में निर्मित हुए। हूण शासक मिहिरकुल के शासनकाल में निर्मित सूर्य मन्दिर के अवशेष वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं। सिर्फ अभिलेखीय साक्ष्य से ही इसकी पुष्टि होती है। ग्वालियर दुर्ग से ज्ञात संरचनात्मक मन्दिरों में तेली का मन्दिर विशिष्ट है, जो कि प्रतिहार कालीन कला का एक अनूठा नमूना है। तेली का मन्दिर ग्वालियर दुर्ग के सुरक्षित मन्दिरों में सर्वप्राचीन है। यह मन्दिर

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रा॰भा॰इ॰सं॰ एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ॰प्र॰)

पूर्वाविमुख है तथा नीची जगती एवं ऊंचे अधिष्ठान पर बनाया गया है, जिसमें अनेक अलंकृत बन्धन है। मन्दिर के जंघा भाग में बनी छोटी–छोटी कुलिकाओं में अनेक देवाकृतियां प्रदर्शित हैं। ये कुलिकाएं सम्पूर्ण जंघा भाग में बनाई गई हैं। इस प्रकार लगभग 108 देव प्रतिमाओं को यहां प्रदर्शित किया गया है।

तेली का मन्दिर का प्रवेश द्वार पंचशाख योजना पर निर्मित है। प्रवेश द्वार के ललाटबिम्ब पर उड़ते हुए गरूड़ का अंकन किया गया है। प्रवेश द्वार पर दाँयी और बाँयी ओर क्रमशः कच्छप वाहिनी यमुना और मकर वाहिनी गंगा का अंकन है। देवी यमुना की प्रतिमा कट्यावलम्बित मुद्रा में प्रदर्शित है, जिसका बाँया हाथ ऊपर की ओर खण्डित है। यह प्रतिमा एकावलि हार, कुण्डल, भुजबन्ध, रत्नजडित मेखला आदि आभूषणों से अलंकृत है। मेखला से नीचे की ओर लटकती मालाएं हैं और वस्त्रों पर पुष्पाकृति का अंकन है। केश ऊपर की तरफ सुंदर ढंग से बंधे हैं, पैरों में कड़ों का अंकन है। यमुना की इस प्रतिमा के साथ में छत्र धारिणी स्त्री प्रतिमाएं प्रदर्शित हैं।

गंगा की प्रतिमा का अधिकांश भाग खडिण्त है। आभूषणों में एकावलि हार, बाजूबन्ध, कटिमेखला, पैरों में पायल, वस्त्र पर पुष्पाकृति का अंकन है। इस प्रतिमा के साथ में भी छत्र धारिणी स्त्री प्रतिमाएं हैं। इन प्रतिमाओं के साथ शैव द्वारपाल का भी अंकन किया गया है, जिसके बायें हाथ में त्रिशूल है। प्रवेश द्वार के दाँयी ओर ऊपरी भाग में ललितासन में बैठी एक स्त्री प्रतिमा प्रदर्शित है, जिसके हाथ में वीणा है। इस प्रतिमा का अधिकांश भाग खण्डित हो चुका है।

मंदिर की बाह्य भित्तियों पर प्रदर्शित कतिपय देव मूर्तियां शिल्पकला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. **योगी प्रतिमा**– मंदिर की उत्तरी दिशा की भित्ति पर एक योगी की आसनस्थ प्रतिमा, ज्ञान तथा योगासन मुद्रा में प्रदर्शित हैं। इस प्रतिमा के मुख पर सौम्य भाव देखे जा सकते हैं। घुटने के नीचे

योगपट्ट के बंधन का अंकन है।

2. **ब्रह्मा**– ब्रह्मा की एक प्रतिमा उत्तर–पूर्व दिशा में प्रदर्शित है। इस द्विभुजी ब्रह्मा प्रतिमा का दाँया हाथ अभय मुद्रा में है और बाँयें हाथ में कमण्डल है। चेहरे पर दाढ़ी का अंकन किया गया है, यज्ञोपवीत धारण किए हुए हैं तथा वस्त्रों में केवल संघाटी का अंकन हैं।

   ब्रह्मा की एक अन्य प्रतिमा उत्तर–पश्चिम दिशा की ओर प्रदर्शित है, जो कि द्विभुजी है। इस प्रतिमा का दाँया हाथ अभय मुद्रा में एवं बाँयें हाथ में कमण्डल (खण्डित अवस्था) है। चेहरे पर लम्बी दाढ़ी का अंकन है।

3. **त्रिविक्रम**– यह प्रतिमा उत्तर–पूर्व दिशा की ओर प्रदर्शित है। इस प्रतिमा में विष्णु का द्विभुजी विशाल रूप दिखाया गया है, जिसमें विष्णु का दाँया पैर जमीन पर एवं बाँया पैर आकाश की तरफ उठा हुआ है। द्विभुजी विष्णु के दाँयें हाथ में गदा एवं बायें हाथ में शंख प्रदर्शित है। प्रतिमा के नीचे बाँयी तरफ दान देते बलि और उनके सामने छत्रधारी वामन आकृति अंकित है। विष्णु की इस प्रतिमा को एकावलि हार, किरीट मुकुट आदि आभूषणों से अलंकृत किया गया है।

4. **वायु**– यह प्रतिमा उत्तर–पश्चिम दिशा में प्रदर्शित है। द्विभुजी वायु की इस प्रतिमा का दाँया एवं बाँया हाथ ऊपर की तरफ उड़ते वस्त्र को पकड़े हुए है। इस प्रतिमा के नीचे दाँयी तरफ हिरन का अंकन किया गया है, प्रतिमा त्रिभंग मुद्रा में प्रदर्शित है। आभूषणों में एकावलि हार, कटिमेखला, कुण्डल आदि का अंकन देखने को मिलता है। इसी प्रतिमा के बलग में बाँयीं ओर कार्तिकेय को प्रदर्शित किया गया है। त्रिभंग मुद्रा में खड़ी कार्तिकेय की इस प्रतिमा के दाँये हाथ में सर्प है एवं बाँये हाथ से वह मोर को कुछ खिला रहे हैं। प्रतिमा को रत्नजडित एकावलि हार, कटिमेखला आदि आभूषणों से अलंकृत दिखाया गया है।

5. **शिव**– पश्चिम दिशा की बाह्य भित्ति में प्रदर्शित प्रतिमाओं में गजांतक की चतुर्भुजी प्रतिमा शिल्प की दृष्टि से एक उत्तम कृति है। इस प्रतिमा में चतुर्भुजी शिव अपनी तीन भुजाओं से गज को ऊपर उठाए हैं। नीचे बाँयी तरफ अंजलिहस्त मुद्रा में पार्वती प्रदर्शित हैं एवं दाँयी तरफ पीठ किए हुए एक मानवाकृति बनी हुई है। शिव के मुख पर रौद्र भाव है। चतुर्भजी शिव कुण्डल, एकावलि हार, कटि पर मुंजमेखला एवं गले में मुण्डमाला धारण किए हुए हैं। इस प्रतिमा में गजासुर वध के अत्यंत मार्मिक दृश्य का प्रदर्शन है।

 शिव की एक अन्य प्रतिमा को भी पश्चिम दिशा में प्रदर्शित किया गया है। यह प्रतिमा चतुर्भुजी है। सीधी खड़ी इस शिव प्रतिमा के दाँये तरफ के एक हाथ में सर्प है एवं दूसरा हाथ नीचे वरद मुद्रा में है तथा बाँये तरफ के एक हाथ में त्रिशूल है एवं नीचे का दूसरा हाथ खण्डित है। चतुर्भुजी शिव यज्ञोपवीत धारण किए हुए हैं।

6. **गणेश**– पश्चिम दिशा की ही एक देव कुलिका में चतुर्भुजी गणेश की प्रतिमा प्रदर्शित की गई है। गणेश नृत्य मुद्रा में दिखाए गए हैं। चतुर्भुजी गणेश के दाँये तरफ के एक हाथ में परशु है एवं दूसरा हाथ पेट पर रखा है तथा बाँये तरफ के एक हाथ में अंकुश हैं एवं दूसरा हाथ जंघा पर रखा है। प्रतिमा में यज्ञोपवीत का अंकन किया गया है। गणेश की यह प्रतिमा एकावलि हार, हाथों में कड़े, ऊर्ध्वभाग में भुजबन्ध, पैरों में पायल, रत्नजडित मुकुट, कटिमेखला आदि आभूषणों से अलंकृत है।

7. **ब्रह्मा** – पश्चिम दिशा में बनी देव प्रतिमाओं में ब्रह्मा को भी प्रदर्शित किया गया है। दाढ़ीयुक्त ब्रह्मा की इस प्रतिमा का दाँया हाथ अभय मुद्रा में तथा वामहस्त कमण्डल लिए हुए है।

8. **मयूरासीन कार्तिकेय**– मंदिर की दक्षिणी भित्ति पर मयूरासीन कार्तिकेय की एक प्रतिमा ललितासन मुद्रा में प्रदर्शित है। इस प्रतिमा में कार्तिकेय दाँये हाथ से मोर को कुछ खिला रहे हैं और

बाँये हाथ में अंकुश लिए हैं। मूर्ति शिल्प की दृष्टि से यह एक उत्तम कृति है। कार्तिकेय ने यज्ञोपवीत धारण किया हुआ है।

9. दक्षिणी दिशा **में नृत्य** मुद्रा में द्विभुजी गणेश को भी प्रदर्शित किया गया है। इस प्रतिमा का दाँया हाथ खण्डित है एवं बाँये हाथ में मोदक है। सर्पयज्ञोपवीत का अंकन किया गया है। प्रतिमा अंकरण में एकावलि हार, माथे पर मोती की माला का बन्धन, हाथों व पैरों में कड़े, कटिमेखला आदि आभूषण देखने को मिलते हैं।

10. त्रिमुखी ब्रह्मा भी दक्षिणी दिशा में प्रदर्शित हैं। इस प्रतिमा में चतुर्भुजी ब्रह्मा कमल पर आसीन हैं, दाँया एवं बाँया हाथ ऊपर की तरफ (आयुध खण्डित) है एवं नीचे के दोनों हाथ घुटने पर रखे हैं। ब्रह्मा द्विलरी यज्ञोपवीत धारण किए हुए हैं।

11. **अग्नि**– दक्षिण दिशा में द्विभंग मुद्रा में अग्नि की एक प्रतिमा को प्रदर्शित किया गया है। इस प्रतिमा में सिर के चारों ओर अग्नि जलती हुई देखी जा सकती है। अग्नि की प्रतिमा के नीचे दाँयी ओर उनके वाहन मेढ़े का भी अंकन है।

12. मन्दिर के दक्षिणी–पूर्वी भाग में बनी एक देव कुलिका में 'अज एकपाद' की द्विभुजी प्रतिमा का सुंदर प्रदर्शन है। इस प्रतिमा का दाँया हाथ अभय मुद्रा में एवं वामहस्त कमण्डल धारण किए हुए है।

13. दक्षिण–पूर्व दिशा में ललितासीन चतुर्भुजी शिव को वाहन नन्दी सहित प्रदर्शित किया गया है। चतुर्भुजी इस शिव प्रतिमा के दाँये तरफ के एक हाथ में सर्प है एवं दूसरा हाथ वरद मुद्रा में है तथा बाँये तरफ के एक हाथ में त्रिशूल है एवं दूसरा हाथ घुटने पर रखा है। घुटनों पर योगपट्ट भी बंधा है। इस चतुर्भुजी शिव के बगल में बाँयी ओर की देव कुलिका में पद्मासीन लकुलीश की भी एक महत्वपूर्ण प्रतिमा प्रदर्शित है। लकुलीश इस प्रतिमा के दाँये हाथ में लकुट का अंकन है एवं बाँया हाथ घुटने पर रखा है। घुटनों के पास योगट्ट बंधा है तथा ऊपर छत्र का अंकन किया गया है।

14. दक्षिण–पश्चिम दिशा में उड़ते हुए गरूड़ का प्रदर्शन है। इस प्रदर्शित गरूड़ का दाँया हाथ कटि पर एवं बाँया हाथ घुटने पर रखा है। आभूषणों में गोल कुण्डल, एकावलि हार और मेखला का अंकन देखा जा सकता है।

मंदिर की जंघा भाग के अतिरिक्त भी बाह्य भित्तियों में बने लघु कोष्ठों के ऊपर भी छोटी–छोटी मूर्तियां प्रदर्शित हैं। दक्षिणी बाह्य भित्ति के शिखर पर चन्द्रशाला में सिरविहीन अष्टभुजी देवी का ललितासन मुद्रा में प्रदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिल्पकला की दृष्टि से दुर्गा की यह प्रतिमा अद्वितीय है।

तेली का मंदिर में प्रदर्शित देव प्रतिमाओं के साथ–साथ शैव द्वारपालों का भी अंकन किया गया है। यहां प्रदर्शित प्रतिमाओं में शैव परिवार का अंकन अत्यंत सुंदर ढंग से हुआ है। इस मन्दिर में ब्रह्मा की अनेक रूपों में बार–बार पुनरावृत्ति देखने को मिलती है।

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि प्रतिहार कालीन मन्दिरों की श्रृंखला में ग्वालियर दुर्ग स्थित तेली का मन्दिर न केवल वास्तुशिल्प की दृष्टि से, बल्कि मूर्ति शिल्प की दृष्टि से भी अद्वितीय है।

सन्दर्भ –

1. कनिंघम, अलेक्जेण्डर : 2000 (पुनर्मुद्रित), आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट, खण्ड–2 (1862–65), नई दिल्ली।
2. मिश्रा, बी॰डी॰ : 1993, फोर्ट्स एण्ड फोर्ट्रेसेस् ऑफ ग्वालियर एण्ड इट्स इण्टरलेण्ड, नई दिल्ली।
3. चक्रवर्ती, कल्याणकुमार : 1984, ग्वालियर फोर्ट, नई दिल्ली।
4. कृष्णदेव : 1969, टेम्पल्स् ऑफ इण्डिया, वॉल्यूम–I, नई दिल्ली।
5. बेनर्जी, जे॰एन॰ : 1974, दि डेवलप्मेन्ट ऑफ हिन्दू आइकॉनोग्राफी, नई दिल्ली।

6. सिंह, अमर : 1996, ग्वालियर दुर्ग, मन्दिर एवं मूर्तियाँ, लखनऊ।

7. त्रिवेदी, आर॰डी॰ : 1990, टेम्पल्स् ऑफ प्रतिहार पीरिअड इन सेन्ट्रल इण्डिया, नई दिल्ली।